Sapph. fr. 55 V.

κατθάνοιcα δὲ κείcηι‿οὐδέ ποτα μναμοcύνα cέθεν
ἔccετ' οὐδὲ †ποκ'† ὔcτερον· οὐ γὰρ πεδέχηιc βρόδων
τὼν ἐκ Πιερίαc, ἀλλ' ἀφάνηc κἀν Ἀίδα δόμωι
φοιτάcηιc πεδ' ἀμαύρων νεκύων ἐκπεποταμένα.

I Stob. III 4,12 (III 221s. W.-H.) Cαπφοῦc (πρὸc ἀπαίδευτον γυναῖκα cod. Voss.) [1-4]; **II** Plut. *Coniug. Praec.* 145f-146a (I 299 Paton-W.) εἰ γὰρ ἡ Cαπφὼ διὰ τὴν ἐν τοῖc μέλεcι καλλιγραφίαν ἐφρόνει τηλικοῦτον, ὥcτε γράψαι πρόc τινα πλουcίαν [1-3 Πιερίαc]; **III** Plut. *Quaest. Conv.* 646e-f (IV 48 Hubert) μεμνῆcθαί μοι δοκῶ Cαπφοῦc λεγούcηc πρόc τινα τῶν ἀμούcων καὶ ἀμαθῶν γυναικῶν· [1κατθ. δὲ κ., 2 οὐ γὰρ π. - 3 Πιερίηc]; **IV** Clem. Al. *Paed.* II 8,72 (2,201,21ss. St.) ῥόδῳ δὲ τὰc Μούcαc Cαπφὼ καταcτέφει· [2 οὐ - 3 Πιερίαc]. cf. Aristid. *Or.* XXVIII 51 (2,158 K.) (= Sapph. fr. 193 L.-P.) οἶμαι δέ cε καὶ Cαπφοῦc ἀκηκοέναι πρόc τιναc τῶν εὐδαιμόνων δοκουcῶν εἶναι γυναικῶν μεγαλαυχουμένηc καὶ λεγούcηc, ὡc αὐτὴν αἱ Μοῦcαι τῷ ὄντι ὀλβίαν τε καὶ ζηλωτὴν ἐποίηcαν, καὶ ὡc οὐδ' ἀποθανούcηc ἔcται λήθη (fort. ad Sapph. fr. 147 referendum cens. L.-P.). prim. rec. Stephanus, metrum cogn. Grotius. cum Sapph. fr. 147 coni. vol. Blomfield, cum Sapph. fr. 56 Schneidewin

1 κατθάνοιcα III : -οῖcα I : -οῦcα (vel καὶ θ-) II | κείcηι Darmst. : κείcεαι I (codd. Voss., A^2), II, III : κεῖcθαι I (ed. Trinc.) | οὐδέποτε I corr. Blomfield : οὐδέ τιc II, unde οὐδ' ἔτι τιc (et v. 2 οὐδέποτ' εἰc cum Grotio) Spengel ‖ **2** ἔccετ' I (cod. Voss.) : ἔcετ' I (ed. Trinc.) : ἔcεται II | οὐδέποκ' I : -ποτ' εἰc Grotius : οὐδὲ πόθα‿εἰc Bucherer coll. *Il.* XIV 368 | pro ὔcτερον ap. Alc. fr. 73,11 ἄψερον legitur | πεδέχηc III corr. Lobel : παῖδ' ἔχειc II (praeter cod. O) : μετέχειc I, II (O) : ἀπ' ἀρχῆc IV | ῥόδων (-ον) corr. Brunck, cf. Hesych. β 1179 L. (cf. et Sapph. fr. 53) ‖ **3** πιερίαc (-ηc) : περιεργίαc IV | κἀν Lobel : κὴν I (ed. Trinc.) : κεὶν I | αἰδαο I cod. A^2 | δόμωι Fick : δόμο I (cod. Voss.) : δόμοιc I (ed. Trinc.) ‖ **4** φοιτάcηιc Lobel : -cειc (-cιc) I | παῖδ' I corr. Salmasius | -μένα I (codd. Voss., A^2) : -μέναν I (ed. Trinc.)

1s. *Il.* VIII 181 μνημοcύνη τιc ἔπειτα … γενέcθω ‖ **2** *Il.* XIV 368 κείνου δ' οὔ τι λίην ποθὴ ἔccεται ‖ **3** *Il.* XXI 52 καὶ εἰν Ἀΐδαο δόμοιcιν, *Od.* XXIV 203 εἰν Ἀΐδαο δόμοιc', Bacch. *PSI* 1081,19-20 [.]ομων [τ'] Ἀΐδαο, Alc. 48,15]c Ἀίδαο δῶμα ‖ **4** *Od.* IV 824 εἴδωλον ἀμαυρόν, Theocr. 2,19 = 11,72 πᾶ τὰc φρέναc ἐκπεπόταcαι;, Hesych. ε 1063 L. ἐκπεπότημαι· ἐκπέπληγμαι

fr. 57 V.

τίc δ' ἀγροΐωτιc θέλγει νόον …
ἀγροΐωτιν ἐπεμμένα cτόλαν …
οὐκ ἐπιcταμένα τὰ βράκε' ἔλκην ἐπὶ τὼν cφύρων;

I Ath. I 21b-c (codd. CE) ἔμελε δὲ αὐτοῖc καὶ τοῦ κοcμίωc ἀναλαμβάνειν τὴν ἐcθῆτα καὶ τοὺc μὴ τοῦτο ποιοῦνταc ἔcκωπτον … Cαπφὼ περὶ Ἀνδρομέδαc cκώπτει· [1, 3]; **II** Philem. 162 pp. 107s. Osann ῥακόc … ὅπερ οἱ Αἰολεῖc βράκοc φαcί. χρῆcιc δὲ τοιαύτη παρὰ Cαπφοῖ ἐν τῷ· [1,3], ἤγουν ποία γυνὴ χωριτική, ἐζωcμένη ἀγροικικώτερον ἐφέλκεται ἐραcτήν = Eust. 1916,46ss.; **III** Max. Tyr. 18,9s. p. 231 Hob. κωμῳδεῖ (*scil.* ὁ Cωκράτηc) cχῆμά που καὶ κατάκλιcιν cοφιcτοῦ, καὶ αὕτη (Cαπφώ)· [2]. prim. rec. Ursin. (separatim). fragmm. ad eundem locum spectare cens. Casaubon, fragmm. coni. Blomfield (v. 2 non rec. Bergk, Diehl). vario modo in versus redig. edd.

1 τίc δ' ἀγροιῶτιc τοι I (C) et (-ιώτηc) II : τῆc δ' ἀγροιώτατον I (E) ‖ **2** τίc δὲ ἀγροιῶτιν (ἀγροιωτειν cod. R) III, τίc δὲ del. Blomfield (qui vv. 1 et 2 conflavit) ‖ **3** cτόλαν Voigt : cτολὴν III : cπόλαν Hermann, acc. L.-P. | ἕλκειν I (C) corr. Blomfield : ἕλκων I (E)

1 *Il.* XII 251 θέλγε νόον, *H. Hom. Cer.* ἔθελγε … νόον ‖ **3** Theocr. 18,11 οἷα γύναικεc φορέοιc' ὑδάτινα βράκη, Hesych. β 1047 L. βράκοc· … ἱμάτιον πολυτελέc